quantity of cement actually supplied to Rajasthan during 1966-67 was 3,25,000 tonnes. As no complaint of serious shortage has been received, it may be assumed that this is the requirement of the State. Even if more quantities are required, this can be supplied by the industry.

Training in Small Scale Industries

687. **Shri K. Pradhani:**
Shri Ramachandra Ulaka:
Shri Dhuleshwar Meena:
Shri Heerji Bhai:

Will the Minister of Industrial Development and Company Affairs be pleased to state:

(a) the number of persons sent abroad for training in Small Scale Industries from Rajasthan during the last three months; and

(b) the names of countries to which they were sent?

The Minister of Industrial Development and Company Affairs (Shri F. A. Ahmed): (a) Nil, Sir.

(b) Does not arise.

Import of Steel for Rajasthan

688. **Shri Heerji Bhai:**
Shri Ramachandra Ulaka:
Shri Dhuleshwar Meena:
Shri K. Pradhani:

Will the Minister of Commerce be pleased to state the quantum of foreign exchange allotted to the State of Rajasthan for the import of steel during 1966-67?

The Minister of Commerce (Shri Dinesh Singh): With the introduction of liberalised licensing shceme in August, 1966, the system of making Statewise allocation was discontinued. Instead, units which had obtained import licences during 1964-65 or 1965-66 were granted licences on the basis of three times the value of licences issued in 1964-65 or 12 times the value of licences issued in 1965-66, if units concerned were engaged in industries listed as Priority Industries. In respect of units in other industries, the multiple allowed was 2 times or 8 times as the case may be. Units which had not secured any licences during 1964-65 or 1965-66 were granted licences on the basis of Essentiality Certificates issued by the concerned sponsoring authorities.

Leave Reserve T. T. E:

689. **Shri Bhogendra Jha:** Will the Minister of Railways be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Leave Reserve T.T.E. on the North Eastern Railway perform duties of T.T.E. category, but they get less salary; and

(b) if so, the steps his Ministry proposes to take to rectify the anomaly?

The Minister of Railways (Shri C. M. Poonacha): (a) and (b). Instructions already exist for payment of officiating pay to the leave reserve Ticket Collectors as and when they are put to officiate as T.T.Es. Complaints have, however, been received that on Katihar West District of the North Eastern Railway, correct payments to some leave reserve Ticket Collectors have not been made for working as T.T.Es and the matter is under investigation.

इस्पात कारखाने की मशीनें

691. **श्री महाराज सिंह भारती :** क्या इस्पात, खान और धातु मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भिलाई, रूरकेला तथा दुर्गापुर स्थित तीन इस्पात कारखानों में लगाई गई मशीनें उसी किस्म की मशीनें हैं जैसी रूस, जर्मनी, ब्रिटेन तथा अमरीका में लगी हुई हैं ;

(ख) क्या उपरोक्त कारखानों के कर्मचारियों को वही वेतन दिये जाते हैं जो कि उक्त देशों में इस प्रकार की मशीनों को चलाने वाले कर्मचारियों को दिये जाते हैं; और

(ग) क्या हमारे देश में इस्पात के उत्पादन पर वही लागत आती है जो कि उक्त देशों में उसी किस्म के इस्पात पर आती है?

इस्पात, खान और धातु मंत्री (डा० चन्ना रेड्डी): (क) भिलाई, राउरकेला, और दुर्गापुर के एक मिलियन टन की क्षमता के कारखानों के लिए अधिकांश संयंत्र और उपकरण क्रमशः रूस, पश्चिमी जर्मनी और ब्रिटेन में बने थे और इन्हीं देशों ने स्थापना किये थे। इन कारखानों के निर्माण में उन्नत प्रविधियों का प्रयोग किया गया है जिनका विकास अधिकतया महायुद्ध के पश्चात हुआ है।

(ख) लोहा और इस्पात उद्योग के कर्मचारियों के वर्तमान वेतन केन्द्रीय वेतन बोर्ड द्वारा निश्चित किये गये थे और ये 1 अप्रैल, 1965 से लागू हैं। भिन्न भिन्न देशों में इस्पात कर्मचारियों के प्रति घंटे के वेतन भिन्न भिन्न हैं जो वहां के सामान्य वेतन स्तर, उत्पादिता आदि पर निर्भर करते हैं।

(ग) चूंकि भारत की और विदेश की इस्पात कंपनियां अपने देश और विदेश के बाजारों में अपनी श्रेष्ठता बनाये रखने के लिए अपनी उत्पादन लागत को गोपनीय रखती हैं, अतः भारत में इस्पात की उत्पादन लागत की तुलना के लिए ऐसे आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन रांची का विकास

692. **श्री महाराज सिंह भारती**: क्या औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन, रांची की विस्तार योजना पर कितना व्यय किया जायेगा, इसमें कितना समय लगने की संभावना है और इसके पूरा हो जाने पर उसकी क्षमता कितनी होगी;

(ख) उसकी वर्तमान क्षमता कितनी है तथा उत्पादन कितना है; और

(ग) क्या यह सच है कि उक्त कारखाना खरीददार न मिलने के कारण अपनी उत्पादन क्षमता के केवल 10 प्रतिशत भाग का ही प्रयोग कर रहा है?

औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्री (श्री फखरुद्दीन अली अहमद): (क) हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन का विस्तार करने की अभी कोई योजना नहीं है।

(ख) और (ग). कम्पनी के आधीन संयंत्रों में से फाउन्ड्री फोर्ज संयंत्र तथा हैवी मशीन टूल्स संयंत्र अभी पूरे होने बाकी हैं। जो मशीनें लग चुकी हैं उनमें प्रारम्भिक उत्पादन शुरू हो गया है। 1966-67 का वास्तविक उत्पादन तथा 1967-68 में सम्भावित उत्पादन निम्न प्रकार है।

फाउन्ड्री फोर्ज संयंत्र	उत्पादन (मी० टन)
1966–67	5,761
1967–68	15,000
हैवी मशीन टूल्स संयंत्र	मशीनों की संख्या
1966–67	4
1967–68	37

हैवी मशीन बिल्डिंग संयंत्र की 1966–67 तथा 1967–68 की क्षमता तथा उत्पादन निम्न प्रकार है :

	क्षमता	उत्पादन (मी० टनों में)
1966–67	14,500	14,307 (वास्तविक)
1967–68	15,000	15,000 (आर्डर प्राप्त हो चुके हैं)

इस समय इन संयंत्र में अप्रयुक्त क्षमता बिल्कुल नहीं है।